National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2015; 1(2): 84-86
© 2015 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

महाभारत-कालीन राजनीतिक व्यवस्था

डॉ सुरेश कुमार

महाभारत भारतीय राजनीति, समाज और संस्कृति का विश्वकोश है। यह केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि प्राचीन भारत के शासन, न्याय, कूटनीति और धर्मनीति का दर्पण है। भारतीय संस्कृति और इतिहास का अध्ययन करते समय महाभारत की उपेक्षा नहीं की जा सकती। जिसमें तत्कालीन समाज, राजनीति, धर्म, संस्कृति और दर्शन का अद्भुत समन्वय मिलता है।

"धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ। यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्[1]॥"

जो कुछ इस ग्रंथ में है, वह अन्यत्र मिल सकता है; पर जो इसमें नहीं है, वह कहीं और उपलब्ध नहीं है महाभारत काल को भारतीय राजनीतिक विचारधारा का आधार स्तंभ कहा जा सकता है। इसमें हमें स्थान, मंत्री और सभा की भूमिका, कूटनीति, युद्धनीति, न्याय-व्यवस्था और अर्थनीति राजा का धर्म, प्रजा का व्यापक चित्रण मिलता है। महाभारत काल में राज्य का उद्देश्य धर्मपालन, न्याय और प्रजापालन था।

महाभारत काल को भारतीय राजनीतिक विचारधारा का आधार स्तंभ कहा जा सकता है। इसमें हमें राजा का धर्म, प्रजा का स्थान, मंत्री और सभा की भूमिका, कूटनीति, युद्धनीति, न्याय-व्यवस्था और अर्थनीति का व्यापक चित्रण मिलता है।

न च राज्ञां विनीतानां कूटनीतिः प्रसज्यते।
कूटनीतिः प्रवर्तेत, दुष्टेषु शत्रुषु नित्यदा[2]॥

सज्जन राजाओं के बीच कूटनीति की आवश्यकता नहीं होती,परंतु दुष्ट शत्रुओं के साथ सदा कूटनीति का प्रयोग करना चाहिए।

कालेन नीतिः प्रलयाय नीयते,
अकालेन नीतिः प्रलयं नयति॥[3]

नीति (या कूटनीति) का प्रयोग यदि उचित समय पर किया जाए तो वह राज्य की रक्षा करती है, परंतु अनुचित समय पर की गई नीति विनाश का कारण बन जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि कुटनीति महाभारत काल में भी शासन का आधार रही है जिससे राज्य की स्थिरता सुनिश्चित होती थी। कुटनीति राजनीति का अभिन्न अंग है।

महाभारत में राज्य की संकल्पना

उस युग में राज्य केवल बल या विजय पर आधारित संस्था नहीं था, बल्कि यह धर्म और प्रजा-रक्षा के लिए संगठित शक्ति थी। महाभारत काल वह समय था जब गणराज्यीय परंपराएँ धीरे-धीरे क्षीण हो रही थीं और वंशानुगत राजतंत्र अपनी जड़ें मजबूत कर रहा था। धर्म राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान निर्धारक

तत्व रहा ।शान्तिपर्व में भीष्म युधिष्ठिर को बताते हैं कि राज्य और राजा का अस्तित्व केवल धर्म पर टिका है:

"राजा धर्मेण भूमेन्द्रः प्रजां धर्मेण पालयेत्।

धर्मेण रक्षितो राजा धर्मे तिष्ठति निश्चितम्॥[4]"

अर्थात् राजा धर्मपूर्वक प्रजा की रक्षा करे। जब राजा धर्म की रक्षा करता है, तब वही धर्म राजा की रक्षा करता है। इससे स्पष्ट होता है कि राज्य का मूल उद्देश्य धर्म की रक्षा और प्रजापालन है ।

राज्य और प्रजा का संबंध

महाभारतकालीन शासकीय व्यवस्था में प्रजा और राजा परस्पर पूरक हैं। बिना प्रजा के राजा का अस्तित्व नहीं और बिना राजा के प्रजा असुरक्षित।

"राजा धर्मेण पालयेत् प्रजाः स्वाः पुत्रवत्सदा [5]**।**

राजा केवल शासक नहीं था, वह समाज का संरक्षक, न्यायाधीश और धर्मपालक भी है । वह पुत्र की भांति सदा प्रजा का पालन करता है।

- युधिष्ठिर : धर्माधारित राज्य व्यवस्था के प्रतीक। उन्होंने हमेशा कहा कि "धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः"।
- दुर्योधन : महत्वाकांक्षा और शक्ति-लिप्सा का प्रतीक, जिसने धर्म की अनदेखी कर केवल सत्ता प्राप्ति को लक्ष्य बनाया।

इन दोनों के उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि महाभारत केवल सत्ता संघर्ष की कथा नहीं, बल्कि राज्य के नैतिक स्वरूप का विमर्श भी है।

तुलनात्मक अध्ययन

यदि इस विचार की तुलना पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन से करें, तो यह Social Contract Theory (रूसो, हॉब्स, लॉक) से साम्य रखता है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक **"Leviathan" (लेवायथन) (1651)** में उन्होंने राज्य, सत्ता, और मानव स्वभाव के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए।

उन्हें "Modern Political Philosophy का जनक" भी कहा जाता है।

महाभारत काल में राजतंत्र और उत्तराधिकार

महाभारत काल की राजनीतिक व्यवस्था में राजतंत्र प्रमुख शासन-व्यवस्था थी। यद्यपि वैदिक युग में गणराज्यों और सभाओं का अस्तित्व था, किन्तु महाभारत काल तक आते-आते राजसत्ता वंशानुगत और केंद्रीकृत हो गई थी। इस काल में *हस्तिनापुर*, *मगध*, *पञ्चाल*, *मथुरा* आदि राज्यों का उल्लेख मिलता है, जिनका शासन राजवंशों के हाथों में था।

महाभारत का मुख्य कथा-तत्त्व ही उत्तराधिकार विवाद और राजसत्ता के संघर्ष से जुड़ा है। धृतराष्ट्र और पाण्डु के वंशजों में हुआ संघर्ष वस्तुतः राजनीतिक उत्तराधिकार की जटिलताओं का ही प्रतीक है।

राजतंत्र का स्वरूप

महाभारत काल में राजतंत्र के निम्नलिखित स्वरूप उभरकर सामने आते हैं—

1. वंशानुगत राजसत्ता – राजा का पद मुख्यतः राजवंश के उत्तराधिकारी को मिलता था।
2. दैवत्व का सिद्धान्त – राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि और धर्म का प्रतीक माना जाता था।
3. धर्माधारित राजत्व – केवल वंशपरंपरा ही नहीं, राजा की योग्यता और धर्मपालन भी महत्वपूर्ण था।

"राजा हि परमं दैवम्, राजा धर्मः सनातनः।

राजा हि परमं सत्यं, राजा धर्मस्य कारणम्॥[6]"

इससे स्पष्ट है कि राजा को समाज का परमाधार माना गया।

राजसत्ता और धर्म

महाभारत यह स्पष्ट करता है कि राजा का वैध उत्तराधिकार केवल रक्त-संबंध से नहीं, बल्कि धर्म और नीति से भी जुड़ा है। महाभारत राजनीति विदुर नीति पर ही आधारित है।

"यो धर्ममभ्युपगतः स राजा, योऽधर्मेण स राज्ञः शत्रुः।[7]**"**

अर्थात् जो धर्म का पालन करता है वही सच्चा राजा है; जो अधर्म का अनुसरण करता है वह प्रजा का शत्रु है। यह विचार युधिष्ठिर और दुर्योधन के राजनीतिक दृष्टिकोण में साफ झलकता है।

राजा के गुण और कर्तव्य

भीष्म युधिष्ठिर को समझाते हैं कि एक योग्य राजा के लिए कौन से गुण आवश्यक हैं—

1. सत्यनिष्ठा और धर्मपालन
2. प्रजापालन और करुणा
3. साहस और सैन्य कौशल
4. मंत्रिपरिषद् से परामर्श
5. दण्डनीति का पालन

"सत्यं दानं तपो दण्डः क्षमा शीलं दमः शमः।

एतानि राजशार्दूल राजधर्माः प्रकीर्तिताः॥[8]**"**

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।

दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः॥[9]

महाभारत काल की सभा और मंत्रिपरिषद्

महाभारत केवल एक धार्मिक कथा या युद्ध का आख्यान नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज और राजनीति का दर्पण है। इसमें राजा, प्रजा, सभा और मंत्रिपरिषद् की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से चित्रित की गई हैं। किसी भी राजसत्ता का संचालन केवल राजा पर निर्भर नहीं होता, बल्कि उसके पीछे एक सुव्यवस्थित संस्थागत ढाँचा कार्य करता है।

महाभारत में सभा और मंत्रिपरिषद् का वर्णन यह दर्शाता है कि उस काल में शासन प्रणाली संगठित और परामर्श-आधारित थी। सभा केवल शासक वर्ग की बैठक नहीं थी, बल्कि वहाँ धर्म, नीति, न्याय और कूटनीति पर विचार-विमर्श होता था। मंत्रिपरिषद् शासन के प्रशासनिक और दण्डनीति संबंधी कार्यों को व्यवस्थित करती थी।

"राज्ञः सभायां वसन्ति मनीषिणः।

धर्मार्थकाममूलानि परिपृच्छन्ति चानघ।[10]**"**

अर्थात् सभा में विद्वान मनीषी उपस्थित रहते थे और धर्म, अर्थ तथा काम से जुड़े विषयों पर विमर्श करते थे।

सभा के प्रमुख कार्य

1. राजनीतिक निर्णय – युद्ध की घोषणा, संधि और संधि-भंग।
2. प्रशासनिक कार्य – कर निर्धारण, भूमि वितरण और प्रजापालन।
3. न्यायिक कार्य – अपराधों और विवादों का निवारण।
4. कूटनीतिक कार्य – दूतों का स्वागत, विदेशी राजाओं के साथ संवाद।
5. धार्मिक कार्य – यज्ञ और धार्मिक उत्सवों का आयोजन।

सन्धिं च विग्रहं चैव यानासनमथापि वा।
द्वैधीभावं समाश्रित्य नीतिशास्त्रविशारदः।
षड्गुणं गुणमित्याहुर्नयज्ञा नीतिकोविदाः॥[11]

सभा के प्रकार

महाभारत में दो प्रकार की सभाएँ दिखाई देती हैं—

1. स्थायी सभा (राजसभा):

- राजा की राजधानी में स्थित।
- दैनिक प्रशासनिक और राजनीतिक निर्णय यहीं होते थे।

2. विशेष सभा (महासभा):

- विशेष अवसरों पर बुलाई जाती थी, जैसे युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ।
- इसमें विभिन्न राज्यों के राजा उपस्थित होकर सामूहिक निर्णय लेते थे।

महाभारत में प्रमुख कूटनीतिक प्रसंग

कृष्ण का शान्ति-दूत बनना

- कुरुक्षेत्र युद्ध से पहले पाण्डवों ने कृष्ण को हस्तिनापुर भेजा।
- कृष्ण ने दुर्योधन से कहा – "पाण्डवों को पाँच गाँव दे दो, युद्ध टल जाएगा।"
- दुर्योधन ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया और कहा – "सूच्यग्रं न दास्यामि विना युद्धेन केशव।"
- यहाँ कूटनीति असफल रही और युद्ध निश्चित हो गया।

संजय का दूत बनना

- धृतराष्ट्र ने संजय को पाण्डवों के पास भेजा।
- संजय ने पाण्डवों को युद्ध से विरत रहने की सलाह दी।
- किन्तु पाण्डवों ने उत्तर दिया कि बिना न्याय के वे हथियार नहीं छोड़ सकते।

विदुर के परामर्श

- विदुर ने धृतराष्ट्र को कई बार सचेत किया – "धर्मान्न विचलितः पन्थाः।"
- उन्होंने शान्ति का पक्ष लिया, परंतु उनकी बात अनसुनी कर दी गई।

महाभारत कालीन राजनीति की मुख्य विशेषताएँ

1. राजतंत्र की प्रधानता : राजा सर्वोच्च था, पर उसका अधिकार धर्म द्वारा सीमित था।
2. मंत्रिपरिषद् और सभा : शासन के सहयोगी अंग थे, जो परामर्श और निर्णय में सहभागी थे।
3. धर्म और राजनीति का संबंध : राजनीति की आत्मा धर्म था। राजधर्म, वर्णधर्म और कुलधर्म राजनीति को मर्यादा में रखते थे।
4. युद्ध और कूटनीति : युद्ध अंतिम उपाय था, पहले संवाद और संधि का प्रयास होता था।
5. जनकल्याण: राजा को प्रजा पालक और धर्मपालक माना गया।

महाभारत कालीन राजनीति की कमजोरियाँ

1. वंशवाद और सत्ता-संघर्ष : राजसिंहासन को लेकर पाण्डव–कौरव विवाद इसका उदाहरण है।
2. अधर्म और छल का प्रवेश : धूत -क्रीड़ा और द्रौपदी अपमान जैसी घटनाओं ने राजनीति की नींव हिला दी।
3. धर्म और राजनीति का असंतुलन : जब धर्म का पालन न हुआ, तब राज्य और समाज विनाश की ओर बढ़ गए।

उपसंहार

महाभारत केवल एक महाकाव्य नहीं, बल्कि भारतीय राजनीति, समाज और संस्कृति का विश्वकोश है। इस ग्रंथ में वर्णित युद्ध, नीतियाँ, संवाद और उपदेश केवल तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण नहीं, बल्कि शाश्वत सत्य हैं, जो हर युग में राजनीति और समाज को दिशा देते हैं। उपसंहार में हम देखेंगे कि महाभारत कालीन राजनीतिक व्यवस्था ने हमें क्या शिक्षा दी, और आधुनिक काल में उसकी प्रासंगिकता कितनी है ।

संदर्भ-सूची –

1. महाभारतम् (आदिपर्व) 62.33
2. महाभारत, शांति पर्व, राजधर्मानुशासन पर्व : 103.49
3. महाभारत, विदुर नीति
4. महाभारत शान्तिपर्व 59.4
5. महाभारत शान्तिपर्व 59.4
6. हॉब्स, लॉक (लेवायथन (1651))
7. महाभारत, शांति पर्व, राजधर्मानुशासन पर्व : 68.41
8. महाभारत (शान्तिपर्व 59.8)
9. महाभारत, शांति पर्व, राजधर्मानुशासन पर्व : 15.2
10. महाभारत, सभा पर्व, 5.55
11. महाभारत, शांति पर्व, राजधर्मानुशासन पर्व : 61.58